P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-7* March- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों मे हिन्दी की बोधन दक्षताओं को अर्जित करने की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन

रवीन्द्र कुमार शर्मा
शोधार्थी,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
महात्मा ज्योति राव फूले
विश्वविद्यालय,
जयपुर ,राजस्थान

सरिता शर्मा
शोधार्थी,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
महात्मा ज्योति राव फूले
विश्वविद्यालय,
जयपुर ,राजस्थान

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में हिन्दी की बोधन दक्षताओं को अर्जित करने की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन था। न्यादर्श के रूप में कक्षा 6 के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के 150 विद्यार्थियों को लिया गया है । शोध निष्कर्षो से यह पता चलता है कि सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के कक्षा 6 के विद्यार्थियों में हिन्दी की बोधन दाताओं को अर्जित करने की स्थिति में सार्थक अन्तर नहीं हैं।

मुख्य शब्द : न्यूनतम अधिगम स्तर, दक्षता, निजी विद्यालय, राजकीय विद्यालय

प्रस्तावना

सन् 1976 से पूर्व शिक्षा पूर्ण रूप से राज्यों का उत्तरदायित्व था। संविधान द्वारा 1976 में किए गए जिस संशोधन से शिक्षा को समवर्ती सूची में डाला गया उसे दूरगामी परिणाम हुए। आधार भूत वित्तीय एवं प्रशासननिक उपागमों को राज्यों एवं केन्द्रीय सरकार के बीच बांटने की आवश्यकता हुई। जहॉ एक ओर शिक्षा के क्षेत्र में राज्यों की भूमिका एवं उसके उत्तरदायित्व में कोई बदलाव नहीं हुआ वही केन्द्र सरकार ने शिक्षा के राष्ट्र एवं एकीकृत स्वरूप को सुदृढ़ करने का भार भी स्वीकारा। इसके अन्तगर्त सभी स्तरों पर शिक्षको की योग्यता एवं स्तर को बनाये रखने एवं देश की शैक्षिक जरूरतों का आंकलन एवं रख–रखाव शामिल है।

केन्द्र सरकार ने अपनी अगुवाई में शैक्षिक नीतियॉ बनाने और उनको कियान्वयन पर नजर रखने का कार्य जारी रखा है। इन नीतियों में सन् 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन0पी0ई0) तथा वह कार्यवाही कार्यक्रम (पी.ओ.ए.) शामिल है। जिसे सन् 1992 में अघतन किया गया । संशोधित नीति में एक ऐसी राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली तैयार करने का प्रावधान है जिसके अन्तर्गत शिक्षा में एक रूपता लाने, शिक्षा कार्यक्रम को जन आन्दोलन बनाने, सभी को शिक्षा सुलभ कराने, बुनियादी शिक्षा की गुणवत्ता रखने, बालिका शिक्षा पर विशेष जोर देने, देश के प्रत्येक जिले में नवोदय विद्यालय जैसे आधुनिक विद्यालयों की स्थापना करने, माध्यमिक शिक्षा को व्यवसायपरक बनाने, उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विविध प्रकार की जानकारी देने और अन्तर्विषयक अनुसंधान करने, राज्यों में मुक्त विद्यालयों की स्थापना करने, अखिल भारतीय प्रौद्योगिक शिक्षा परिषद को सुदृढ करने तथा खेल –कूद शारीरिक शिक्षा योग को बढ़ावा देने एवं एक सूक्ष्म मूल्यांकन प्रक्रिया अपनाने के प्रयास शामिल है।

समस्या कथन

''उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में हिन्दी की बोधन दक्षताओं को अर्जित करने की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन ''

शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्न है :–

1. निजी विद्यालयों के कक्षा 6 के विद्यार्थियों की स्वाध्याय, व्यवहारिक व्याकरण, शब्द भण्डार का प्रयोग, पढकर व सुनकर विचारों की बोधन दक्षताओं के अर्जन की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. राजकीय विद्यालयों के कक्षा 6 के विद्यार्थियों की स्वाध्याय, व्यवहारिक व्याकरण, शब्द भण्डार का प्रयोग, पढकर व सुनकर विचारों की बोधन दक्षताओं के अर्जन की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-7* March- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

3. कक्षा 6 के विद्यार्थियों की हिन्दी की स्वाध्याय, व्यवहारिक व्याकरण, शब्द भण्डार का प्रयोग, पढकर व सुनकर विचारों की बोधन दक्षताओं के अर्जन की स्थिति का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

1. निजी विद्यालयों के कक्षा 6 के विद्यार्थियों की स्वाध्याय, व्याहारिक व्याकरण, शब्द भण्डार का प्रयोग, पढ़कर व सुनकर विचारों की बोधन दक्षताओं के अर्जन की स्थिति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. राजकीय विद्यालयों के कक्षा 6 के विद्यार्थियों की स्वाध्याय, व्यवहारिक व्याकरण, शब्द भण्डार का प्रयोग, पढ़कर व सुनकर विचारो की बोधन दक्षताओं के अर्जन की स्थिति में कोई सार्थक अन्तर नही है।
3. कक्षा 6 के विद्यार्थियों की हिन्दी की स्वाध्याय, व्यवहारिक व्याकरण, शब्द भण्डार का प्रयोग, पढकर व सुनकर विचारों की बोधन दक्षताओं के अर्जन की स्थिति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन का परिसीमन

1. प्रस्तुत शोध जयपुर जिले तक ही सीमित रखा गया है ।
2. प्रस्तुत शोध को उच्च प्राथमिक स्तर की कक्षा 6 तक ही सीमित रखा गया है।
3. प्रस्तुत शोध कार्य को केवल हिन्दी की बोधन दक्षताओं तक ही सीमित रखा गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श

(यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा)

कक्षा 6
150 विद्यार्थी

सरकारी विद्यालय
75 विद्यार्थी

निजी विद्यालय
75 विद्यार्थी

शोध अध्ययन में प्रयुक्त विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए ''सर्वेक्षण विधि'' का चयन किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य में उच्च प्राथमिक विद्यालयों के कक्षा 6 के विद्यार्थियों में हिन्दी की बोधन दक्षताओं की जॉच करने के लिए प्रश्नावली का निर्माण किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रत्येक दक्षता को अर्जित करने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत

$$\% = \frac{\text{दक्षता अर्जित करने वाले विद्यार्थी} \times 100}{\text{कुल विद्यार्थी}}$$

$$t = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{SD_1^2}{N_1} + \frac{SD_2^2}{N_2}}}$$

t = टी मूल्य
M_1 = प्रथम समूह का मध्यमान
M_2 = द्वितीय समूह मध्यमान
SD_1 = प्रथम समूह का मानक विचलन
SD_2 = द्वितीय समूह का मानक विचलन
N_1 = प्रथम समूह में संख्याओं का योग
N_2 = द्वितीय समूह में संख्याओं का योग

तथ्यों का विश्लेषण एवं परिकल्पना की जॉच

सारणी संख्या –1

कक्षा 6 के निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की बोधन दक्षताओं के अर्जन की स्थिति

क्र. स.	दक्षता विवरण	अर्जित	अअर्जित	आर्जित का प्रतिशत
1	स्वाध्याय	38	37	50.66
2	व्यवहारिक व्याकरण	41	34	54.66
3	शब्द भण्डार का प्रयोग	44	31	58.66
4	पढकर विचारो का बोधन	37	38	49.33
5	सुनकर विचारो का बोधन	42	33	56.00

उपरोक्त सारणी 1 से स्पष्ट है कि स्वाध्याय, व्यवहारिक व्याकरण, शब्द भण्डार का प्रयोग व सुनकर विचारों का बोधन दक्षता अर्जित करने की स्थिति 50% से अधिक है जो कि सामान्य स्थिति है तथा पढ़कर विचारों की बोधन दक्षता को अर्जित करने की स्थिति 50% से कम है अतः पढकर विचारों की बोधन की स्थिति निम्नतम है। अतः निजी विद्यालयों के कक्षा 6 के विद्यार्थियों की स्वाध्याय, व्यवहारिक व्याकरण, शब्द भण्डार का प्रयोग, पढकर व सुनकर विचारों की बोधन दक्षताओं के अर्जन की स्थिति में कोई सार्थक अन्तर नही है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-7* March- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सारणी संख्या –2

कक्षा 6 के राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की बोधन दक्षताओं के अर्जन की स्थिति

क्र. स.	दक्षता विवरण	अर्जित	अअर्जित	आर्जित का प्रतिशत
1	स्वाध्याय	42	33	56.00
2	व्यवहारिक व्याकरण	36	39	48.00
3	शब्द भण्डार का प्रयोग	40	35	53.33
4	पढकर विचारो का बोधन	41	34	54.66
5	सुनकर विचारो का बोधन	47	28	62.66

उपरोक्त सारणीः 2 से स्पष्ट है कि स्वाध्याय व्यवहारिक व्याकरण, शब्द भण्डार का प्रयोग, पढ़कर विचारों का बोधन दक्षता अर्जित करने की स्थिति 50% से अधिक है जो कि सामान्य स्थिति है। व्यवहारिक व्याकरण दक्षता अर्जित करने की स्थिति 50% से कम है, अतःव्यवहारिक व्याकरण बोधन दक्षता की स्थिति निम्न है । जबकि सुनकर विचारो का बोधन दक्षता को अर्जित करने की स्थिति 60% से अधिक है। अतः सुनकर विचारों का बोधन दक्षता की स्थिति उच्च है। अतः राजकीय विद्यालयों के कक्षा 6 के विद्यार्थियों की स्वाध्याय, व्यवहारिक व्याकरण, शब्द भण्डार का प्रयोग, पढ़कर व सुनकर विचारो की बोधन दक्षताओं के अर्जन की स्थिति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या : 3

कक्षा 6 के राजकीय व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की हिन्दी बोधन दक्षताओं के अर्जन की स्थिति

क्र. स.	दक्षता विवरण	निजी (अर्जित) N=75	सरकारी (अर्जित) N=75	कुल अर्जित	अर्जित का प्रतिशत
1	स्वाध्याय	38	42	80	53.33
2	व्यवहारिक व्याकरण	41	36	76	50.66
3	शब्द भण्डार का प्रयोग	44	40	84	56.00
4	पढ़कर विचारों का बोधन	37	41	78	52.00
5	सुनकर विचारो का बोधन	42	47	89	59.33

उपरोक्त सारणी 3 विभिन्न विद्यालयों के विद्याार्थियों की चयनित दक्षताओं को अर्जित करने की स्थिति व प्रतिशत को दर्शाती है इससे स्पष्ट होता है कि स्वाध्याय, व्यवहारिक व्याकरण, शब्द भण्डार का प्रयोग, पढकर विचारों का बोधन व सुनकर विचारो का बोधन दक्षता अर्जित करने की स्थिति 50% से अधिक है लेकिन 60% से कम है, अतः स्थिति सामान्य है। अतः कक्षा 6 के विद्यार्थियों की हिन्दी की स्वाध्याय, व्यवहारिक व्याकरण शब्द भण्डार का प्रयोग, पढकर व सुनकर विचारों की बोधन दक्षताओं के अर्जन की स्थिति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन का परीक्षण

प्राप्त निष्कर्ष यह बताते है कि उपर्युक्त परिकल्पनाओं में सार्थक अन्तर नही पाया गया है अतः परिकल्पनाएँ स्वीकृत की जाती है ।

शोध निष्कर्ष

कक्षा 6 के सरकारी एवं निजी विद्यालयो के विधार्थियों की हिन्दी की स्वाध्याय, व्यवहारिक व्याकरण, शब्द भण्डार का प्रयोग, पढकर व सुनकर विचारों की बोधन दक्षताओं के अर्जन की स्थिति को प्रभावित नही करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *विश्व विकास रिपोर्ट– 2004 वर्ल्ड बैंक तथा ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस का प्रकाश ।*
2. *शिक्षा और राष्ट्रीय विकास – 1971 एन.सी.ई. आर.टी. द्वारा प्रकाशित शिक्षा आयोग (1964–66) की रिपोर्ट ।*
3. *दस वर्षीय विद्यालयी पाठयक्रम – 1975 रा0शै0अ0 और प्र0 प0।*
4. *दस वर्षीय विद्यालयी पाठ्यक्रम पर पुनरीक्षण समिति की रिपोर्ट – 1977 शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली।*
5. *जे.पी. नाइक कृत समानता – 1975 गुणवत्ता और मात्रा एपलाइड पब्लिशर्स द्वारा प्रकाशित ।*
6. *कौल, लोकेश–2000 मैथाडोलौजी ऑफ एजयुकेशन रिसर्च विकास पब्लिकेशन।*
7. *सिंह योगेश कुमार – 2004 आधुनिक हिन्दी शिक्षण ए0पी0ए पब्लिशिंग कॉरपोरेशन, अंसारी रोड नई दिल्ली।*

शोध ग्रन्थ

1. *अब्दुल हमीद, एन. 2005 सिरियल स्टूडेंटस प्रॉफिसियंसी इन इंग्लिशः ए सोशल साइकोलॉजिकल पर्सपेक्टिव, अप्रकाशित पी.एच.डी. का शोध प्रबंध, दिल्ली विश्व विद्यालय, दिल्ली।*
2. *चेरीशोकस, जे.ई. 1990 दी रोल ऑफ हयोरीज ऑफ लैग्वेज एण्ड लैग्वेज लर्निंग इन द प्री–सर्विस, इन सर्विस, ट्रेनिंग, एजुकेशन ऐंड डेवलपमेंट ऑफ लैंग्वेज टीचर्स, पीएच.डी. शोध प्रबंध, स्कूल ऑफ इंग्लिश, यूनिवर्सिटी ऑफ डरहम, इग्लैंड।*
3. *इटागी.एन.एच. और सिंह एस.के. (संपादकगण) 2002, लिंग्विस्टिक लैंडस्केपिंग इन इंडिया, मैसूरः सेंट्रल इंस्टिटयूट ऑफ इंडियन लैंग्वेजस एंड महात्मा गॉधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय।*
4. *लिट्लजॉन ए. 1992, व्हाई आर ई. एल.टी. मैटेरियलस द वे दे आर. अप्रकाशित, पीएच. डी. शोध प्रबन्ध, लंकास्टर यूनिवर्सिटी।*
5. *सहगल.ए. 1983, ''ए सोशियो लिंग्विस्टिक स्टडी ऑफ द स्पोकेन इंग्लिश ऑफ द दिल्ली इलाठट एम. फिल का शोध प्रबन्ध दिल्ली विश्वविधालय दिल्ली ।*

पत्र–पत्रिकाएँ

1. *संदर्भ, एकलव्य(हिंदी), होशंगाबाद,भारत।*
2. *विमर्श, दिगंतर (हिंदी), जयपुर, भारत।*
3. *स्रोत, एकलव्य (हिंदी), भोपाल, भारत।*
4. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ द्रविडियन लिंग्विस्टिक्स, तिरूवनंतपुरम, भारत।*
5. *इंडियन जर्नल ऑफ् एप्लॉटाड लिग्विस्टिक्स, दिल्ली, भारत।*
6. *इंटरनेशनल रिव्यू ऑफ एप्लॉयड लिंग्विस्टिक्स न्यूयॉर्क, अमेरिका ।*
7. *लैंग्वेज लर्निग, ऑक्सफोर्ड, इंग्लैड।*
8. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ् द सोशियोलॉजी ऑफ् लैंग्वेज, न्यूयार्क, अमेरिका।*